Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :10.16(2026); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:15, Issue:1(4), January 2026
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

रामकथा के शैक्षिक आदर्श

डॉ राधा रानी सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर
शिक्षा शास्त्र विभाग
आर्य कन्या डिग्री कॉलेज
प्रयागराज

सारांश

राम कथा भारतवर्ष के अतिरिक्त बांग्लादेश , भूटान , चीन, बाली ,श्रीलंका, सुमात्रा, नेपाल ,थाईलैंड इंडोनेशिया, जावा, कंबोडिया, आदि देशों में भी प्रचलित है । भारतीय संस्कृति एवं संस्कार तो राम कथा के आदर्शों पर ही आधारित है । राम आदर्श जीवन के परिचायक है। राम कथा में श्री राम के जीवन चरित्र का वर्णन किया गया है । जीवन संघर्ष को दर्शाया गया है ।पारिवारिक एकता , कर्तव्य , बड़ों का सम्मान , स्नेह , बिना भेदभाव के सभी जीवो को समान रूप से सम्मान देना , कभी न हार मानना , संयम आदि गुण आदर्श श्री राम जी में ही देखने को मिलते हैं। राम कथा की लोकप्रियता तथा व्यापकता दिनों दिन बढ़ती जा रही है। चीन में रामायण की कथा दशरथ कथानम में मिलती है। मलेशिया में राम कथा आधारित ग्रंथ हिकायत सेरीराम है जिसमें रावण के जन्म को महत्व देते हुए रचा गया है। मलेशिया रावण का ननिहाल है। इंडोनेशिया में राम कथा रचना रामायण काकाविन में है यहां की इसकी भाषा कावी है । जो जावा की प्राचीनतम भाषा है। लैटिन, इटालियन ,अंग्रेजी व अन्य कई भाषाओं में भी राम कथा का अनुवाद किया गया है। राम कथा भारतीय संस्कृति के शैक्षिक आदर्श का प्रतीक बन गई

वाल्मीकि रामायण सर्वाधिक पुरानी रचना है। वाल्मीकि की रामायण पर आधारित अनुवाद रामचरितमानस जो तुलसी जी के द्वारा रचित है । चीन में रामायण की कथा दशरथ कथानम में मिलती है। मलेशिया में राम कथा आधारित ग्रंथ हिकायत सेरीराम है जिसमें रावण के जन्म को महत्व देते हुए रचा गया है। मलेशिया रावण का ननिहाल है। इंडोनेशिया में राम कथा रचना रामायण काकाविन में है यहां की इसकी भाषा कावी है । जो जावा की प्राचीनतम भाषा है। लैटिन, इटालियन ,अंग्रेजी व अन्य कई भाषाओं में भी राम कथा का अनुवाद किया गया है। भारतीय संस्कृति एवं संस्कार तो राम कथा के आदर्शों पर ही आधारित है । राम आदर्श जीवन के परिचायक है। राम कथा में श्री राम के जीवन चरित्र का वर्णन किया गया है ।जीवन संघर्ष को दर्शाया गया है ।पारिवारिक एकता , कर्तव्य , बड़ों का सम्मान , स्नेह , बिना भेदभाव के सभी जीवो को समान रूप से सम्मान देना , कभी ना हार मानना , संयम आदि गुण आदर्श श्री राम जी में ही देखने को मिलते हैं। राम कथा की लोकप्रियता तथा व्यापकता दिनों दिन बढ़ती जा रही है।

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :10.16(2026); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:15, Issue:1(4), January 2026
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

बौद्ध तथा जैनियों ने भी रामकथा को अपनाया। बौद्ध ने राम को बोधिसत्व मानकर राम कथा को अपने जातक साहित्य में स्थान दिया ।जैनियों ने भी राम कथा को अपनाया जैन कथा साहित्य में राम , लक्ष्मण तथा रावण केवल जैन धर्म अनुयायी माने गए इन्हें महापुरुषों में स्थान दिया गया रामकथा को भारतीय संस्कृति इतना महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। तीन प्रचलित धर्म हिंदू धर्म में विष्णु अवतार, बौद्ध धर्म में बोधिसत्व तथा जैन धर्म में आठवीं बलदेव के रूप में स्थान प्राप्त है संस्कृत साहित्य में ,भारतीय भाषाओं के साहित्य में ,भारत देश के पड़ोसी देशों के साहित्य में भी राम कथा को एक महत्वपूर्ण स्थान मिला है। महापुराणों में विष्णु के अन्य अवतारों के साथ-साथ राम नाम को भी एक महत्वपूर्ण स्थान मिला है ।महापुराणों तथा उप पुराणों में राम कथा आधारित सामग्री मिली है। स्कंद पुराण पद्म पुराण तथा महाभारत पुराण में राम भक्त के पल्लवित कई राम कथा आधारित रामायण एवं संहिताएं प्रचलित हुई ।आध्यात्मिक रामायण ,अद्भुत रामायण आनंद रामायण ,तत्व संग्रह रामायण आदि प्रमुख रामायण आधारित महाकाव्य तथा नाटक रघुवंशी रावण, भक्ति काव्य, महावीर चरित्र , उत्तर रामचरित , जानकी हरण, बाल रामायण नाटक आदि। तमिल रचित तमिल रामायण 12वीं शताब्दी में, तेलुगु तेलुगु रामायण 13वीं शताब्दी में, मलयालम रचित, कन्नड़ रामायण 16वीं शताब्दी , हिंदी रामचरितमानस 16वीं शताब्दी, उड़िया बलराम दास रामायण 16वीं शताब्दी, मराठी भावार्थ रामायण 18वीं शताब्दी ।

बौद्धों ने सर्वप्रथम राम कथा का प्रचार विदेशों में किया ।रामकथा के दो भिन्न रूप मिलते हैं रामायण काकावीन व अर्वाचीन । श्री राम जो वाल्मीकि कथा से बहुत भिन्न है राम कथा का अर्वाचीन रूप हिंदेसिया में बहुत लोकप्रिय है कंबोडिया की राम कीर्ति बहुत लोकप्रिय है वाल्मीकि रामायण तथा श्री राम कथा पर समन्वय करने का प्रयत्न किया गया है राम कथा का मूल रूप बौद्ध दशरथ जातक के गद्य में सुरक्षित है। इसमें सीता हरण व युद्ध वर्णन का अभाव है। भारतीय भाषाओं में रामायण व राम काव्य संवाद व उप संवाद के रूप में योग वशिष्ठ अध्यात्म रामायण , अद्भुत रामायण , आनंद रामायण , सत्तोपाख्यान हिंदुत्व पर आधारित रामायण कश्मीरी रामायण , रामचरितमानस , रंगनाथ रामायण , बाल रामदास रामायण आदि राम की कथा । राम कथा की राम प्लस आयन अर्थात राम का पर्यटन न रहकर रामचरित के पूर्ण रूप में विकसित हुआ है । भारतीय संस्कृति में राम आदर्श के रूप में प्रचलित पूजनीय व आदर्श है जिनका पूरा जीवन आदर्शों पर आधारित है। भगवत गीता में कृष्ण अर्जुन से कहते हैं शस्त्र धारण करने वाले में मैं राम हूं।

राम और कृष्णा दोनों श्री विष्णु के अवतार के रूप में प्रचलित हैं। रामानंद व रामावत संप्रदाय द्वारा राम भक्त जनसाधारण की धार्मिक चेतना बन गई । राम विष्णु के अनुसार अवतार न रहकर परम ब्रह्म के रूप में पूर्ण अवतार माने जाने लगे । भक्ति भाव के पल्लवित होने के पश्चात राम कथा की ऐसी भावना विकसित हुई । कृष्ण व राम का स्मरण मात्र मुक्ति प्रदान करता है । राम कथा विष्णु अवतार लीला मात्र न रहकर भक्त वात्सल्य भगवान राम के गुण कीर्तन में परिवर्तित हो जाती है। राम कथा अनेक रूप धारण करते हुए धीरे-धीरे भारतीय संस्कृति में व्याप्त हो गई । इसकी लोकप्रियता दिनों दिन बढ़ती गई । मानवीय ह्रदय को आकर्षित करने की जो शक्ति राम कथा में विद्यमान है वह अत्यंत दुर्लभ है वाल्मीकि रामायण में कला तथा आदर्श का जो समन्वय मिलता है उससे भारतीय समाज व संस्कृति प्रभावित हुई । राम भक्ति के

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :10.16(2026); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:15, Issue:1(4), January 2026
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

प्रारंभ से ही राम कथा का समस्त वातावरण बदल गया । भारतवर्ष की संस्कृति राम कथा में विशेष कर मर्यादा पुरुषोत्तम राम तथा पतिव्रता सीता के चरित्र पर केंद्रित हो गई राम कथा भारतीय संस्कृति के शैक्षिक आदर्श का प्रतीक बन गई ।

डॉक्टर शरद सिंह के शोध पत्र के अनुसार राम कथा की वैश्विक वैश्विक सत्ता में निहित उसकी मूल्य के अनुसार राम कथा मात्र एक कथा ही नहीं वरन जीवन जीने की कला है इसमें मानवी सामाजिक व पारिवारिक संबंधों से लेकर जड़ चेतन के पारस्परिक संबंधों की भी व्याख्या बड़ी ही स्पष्ट रूप में की गई है राम कथा में जीवों को निर्जीव वस्तुओं को भी जीवंत व मानवीकृत करने का प्रयास किया गया है रामचरितमानस की लोकप्रियता भारतीय समाज में आज भी प्रमुख है नवीन कार्यों में राम कथा का पाठ एक महत्वपूर्ण व पवित्र कार्य माना जाता है

निष्कर्ष

वाल्मीकि रामायण में कला तथा आदर्श का जो समन्वय मिलता है उससे भारतीय समाज व संस्कृति प्रभावित हुई । राम कथा मात्र एक कथा ही नहीं वरन जीवन जीने की कला है इसमें मानवी सामाजिक व पारिवारिक संबंधों से लेकर जड़ चेतन के पारस्परिक संबंधों की भी व्याख्या बड़ी ही स्पष्ट रूप में की गई है राम कथा में जीवों को निर्जीव वस्तुओं को भी जीवंत व मानवीकृत करने का प्रयास किया गया है राम कथा मात्र एक कथा ही नहीं वरन जीवन जीने की कला है इसमें मानवी सामाजिक व पारिवारिक संबंधों से लेकर जड़ चेतन के पारस्परिक संबंधों की भी व्याख्या बड़ी ही स्पष्ट रूप में की गई है राम कथा में जीवों को निर्जीव वस्तुओं को भी जीवंत व मानवीकृत करने का प्रयास किया गया है राम भक्ति के प्रारंभ से ही राम कथा का समस्त वातावरण बदल गया । भारतवर्ष की संस्कृति राम कथा में विशेष कर मर्यादा पुरुषोत्तम राम तथा पतिव्रता सीता के चरित्र पर केंद्रित हो गई । राम कथा भारतीय संस्कृति के शैक्षिक आदर्श का प्रतीक बन गई ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचि

1. कामिल बुल्के, 2015, राम कथा , हिंदी परिषद् प्रकाशन , इलाहाबाद विश्वविद्यालय , इलाहाबाद
2. तुलसी दास , रामचरितमानस ,गीताप्रेस , गोरखपुर
3. अमरपाल सिंह , तुलसीपूर्व रामसाहित्य , रचना प्रकाशन , इलाहाबाद
4. उपेन्द्रचन्द्र लेखारू , असमिया रामायण, साहित्य , गौहाटी
5. कामिल बुल्के , पुरुसाद सौदास , भारतीय साहित्य , आगरा
6. डॉक्टर शरद सिंह, शोध पत्र , राम कथा की वैश्विक वैश्विक सत्ता में निहित मूल्य
7. इन्द्रप्रकाश पांडेय , अवधी लोकगीत और परंपरा ,इलाहाबाद
8. कृष्णदेव उपाध्याय , भोजपुरी ग्रामगीत ,प्रयाग
9. चंद्रभान , वैदिकसहित्य मैं राम कथा का बीज , नागिरि प्रचारिणी पर्तिका
10. उदय शंकर शास्त्री , ईशवरदास , नागिरि प्रचारिणी पर्तिका
11. गोपाल लाल वर्मा , संथाली लोकगीतों में श्री राम ,सारंग , दिल्ली